बपतिस्मा कब बपतिस्मा नहीं होता? (18:22, 23; 19:1-7)

एक मित्र (मान लेते हैं कि उसका नाम सुनील है) के साथ मेरा बाइबल अध्ययन तब तक अच्छा चल रहा था जब तक कि हम बपतिस्मे के विषय पर नहीं पहुंचे थे। सुनील इस बात पर अड़ा हुआ था कि किसी के बपतिस्मा लेने या न लेने से कोई फ़र्क नहीं पड़ता। जब हमने मरकुस 16:16 और प्रेरितों 2:38 जैसे पदों को पढ़ा था, जिनमें बपतिस्मे और उद्धार के बीच सम्बन्ध का पता चलता है, परन्तु सुनील इन्हें अप्रामाणिक मानकर कंधे उचकाता था। जब तक यह उलझन हल नहीं हो जाती तब तक आगे अध्ययन करने का कोई औचित्य नहीं था, सो मैंने सुझाव दिया कि पहले हम बपतिस्मे के उद्देश्य पर गहन अध्ययन करते हैं। एक कंकार्डैंस शब्दकोश लेकर हम दोनों ने बाइबल में से जहां-जहां बपतिस्मे का उल्लेख आया था, उसकी एक सूची बना ली। एक-एक करके, हमने उन आयतों से अध्ययन आरम्भ किया। हर एक आयत पर आकर मैं सुनील को ऊंचे स्वर में पढ़ने और यह बताने के लिए कहता कि यह आयत बपतिस्मे के उद्देश्य के बारे में क्या कहती है। सुनील द्वारा असम्बद्ध, अस्पष्ट, या अधूरी आयतों को एक-एक कर पढ़ने से मुझे लगा कि प्रेरितों 19 अध्याय तक जाते-जाते रात बीत जाएगी।

सुनील द्वारा प्रेरितों 19 में बारह लोगों के दोबारा बपतिस्मे के बारे में पढ़ते समय मैंने पूरी तरह ध्यान नहीं दिया। मुझे पता था कि प्रेरितों 19:1-7 में बपतिस्मे के उद्देश्य के बारे में कोई निश्चित वाक्य नहीं है, सो मैं अगली आयत पर जाने के लिए तैयार था। मुझे आश्चर्य हुआ कि प्रेरितों 19 पढ़ना बन्द करने पर सुनील के चेहरे पर अनिश्चितता दिखाई देने लगी। उसने वह आयत फिर से धीरे-धीरे पढ़ी। फिर उसने मुझसे कम और अपने आप से ज़्यादा पूछा, ''यदि बपतिस्मे की आवश्यकता नहीं है, तो उन्हें इसे सुधारने की क्या आवश्यकता थी? यदि बपतिस्मा केवल एक सांकेतिक कार्य है, तो उन्होंने इसे दोबारा क्यों लिया?'' हमारे अध्ययन में इस बात से एक नया मोड़ आ गया था। अन्ततः सुनील बपतिस्मे के विषय में बताने वाली आयतों को निष्पक्ष ढंग से पढ़ने लग पड़ा था। वह पहली रात थी जब मैंने प्रेरितों 19 में पौलुस द्वारा बारह लोगों के दोबारा बपतिस्मे की छोटी सी कहानी के महत्व को जाना।

इस पाठ में हम उस घटना और संघर्ष का यह देखते हुए अध्ययन करेंगे कि वह हम पर कैसे लागू होगा। उससे पहले, हमें पौलुस को तीसरी मिशनरी यात्रा पर भेजने के लिए तैयार करना है।

भाइयों को स्थिर करना (18:22, 23; 19:1)

लूका ने पौलुस की दूसरी यात्रा के अन्त और तीसरी के आरम्भ के बारे में इतनी जल्दी से बताया कि हमारी सांसें फूलने लगती हैं। पौलुस के अन्ताकिया में जाने और फिर इफिसुस में लौटने की पन्द्रह सौ मील की यात्रा को, जिसमें कई महीने लग गए थे, उसने तीन आयतों में पूरा कर दिया:[1]

> तब इफिसुस से जहाज खोलकर चल दिया, और कैसरिया में उतर कर (यरूशलेम को) गया और कलीसिया को नमस्कार करके अन्ताकिया में आया। फिर कुछ दिन रहकर वहां से चला गया, और एक ओर से गलतिया और फ्रूगिया में सब चेलों को स्थिर करता फिरा (18:22, 23)।
>
> और जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के सारे देश से होकर इफिसुस में आया, और कई चेलों को देखकर (19:1)।

लूका का उद्देश्य था कि जितनी जल्दी हो सके, इफिसुस में जाकर पौलुस की सेवकाई के बारे में बताया जा सके, जो शायद उसकी तीनों यात्राओं में सबसे अधिक महत्वपूर्ण काम था। इफिसुस एशिया की शान था। यह रोमी राज्य की राजधानी और मुख्य व्यापारिक केन्द्र था। इसकी बन्दरगाह पर बहुत से जहाज़ खड़े हो सकते थे और यह रोम से पूर्व की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग पर स्थित था। व्यापारियों के अलावा, संसार भर से यात्री संसार के सात अजूबों में से, अरतिमिस के मन्दिर को देखने के लिए यहां आते थे। इफिसुस प्रसिद्ध, भव्य, समृद्ध तथा पाप में डूबा हुआ नगर था (इफिसियों 2:1, 12)।

कुछ चेलों को स्थिर करना (19:1-7)

किसी नये नगर में पहुंचने पर पौलुस आमतौर पर भले मनों की तलाश में सबसे पहले वहां के आराधनालय में जाता था (यदि उस नगर में कोई आराधनालय हो तो)। लेकिन इफिसुस में परिस्थिति भिन्न थी। वहां पहले से ही एक छोटी सी कलीसिया थी,[2] जो शायद अक्विला और प्रिस्किल्ला के घर में इकट्ठी होती थी (1 कुरिन्थियों 16:19)। इसलिए, पौलुस ने पहले अपने भाइयों के साथ कुछ समय बिताया। (अपने मन में, मैं उसके पुराने मित्रों अक्विला और प्रिस्किल्ला के उससे दोबारा मिलने के आनन्द को देख सकता हूं।)

नगर में घूमते हुए नये मसीहियों को स्थिर करने में सहायता करते हुए (देखिए 18:23), पौलुस ने ''कई चेलों को देखा'' (19:1ख) जो ''लगभग बारह पुरुष थे'' (आयत 7)।[3] ''देखकर'' शब्द का क्या महत्व है? क्या इसका यह अर्थ है कि पौलुस को उनके बारे में

बताया गया था और वह उनसे मिलना चाह रहा था,[4] या इसका केवल इतना ही अर्थ है कि परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध के अनुसार पौलुस से उनकी मुलाकात हो गई? मैं दूसरी बात के पक्ष में हूं, परन्तु महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि पौलुस ने उनसे सम्पर्क *किया* था।

क्या ये लोग पहले से ही मसीही थे? सामान्यत:, हम मान लेते हैं कि वे मसीही ही थे। लूका यीशु के अनुयायियों के लिए आमतौर पर ''चेला'' शब्द का इस्तेमाल करता था (11:26; इत्यादि)। परन्तु, यहां पर हमें इन बारह पुरुषों को मसीही कहने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। जब पौलुस ने उनसे कहा, ''क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?'' तो उनका उत्तर था ''नहीं'' (19:2)। क्योंकि नया नियम किसी के आत्मा पाने के बिना उसके मसीही होने की सम्भावना की जानकारी नहीं देता (प्रेरितों 2:38; रोमियों 8:9; तीतुस 3:5; इब्रानियों 6:4; 1 यूहन्ना 3:24; 4:13), इस स्थिति में इन लोगों को मसीही कैसे कहा जा सकता है।

शायद लूका ने यह बताए बिना कि वे किसके अनुयायी थे ''चेले'' शब्द का इस्तेमाल ''सीखने वालों और अनुयायियों'' के साधारण अर्थ में किया। यह भी सम्भव है कि यूनानी शब्द के अनुवाद ''कुछ'' से संकेत मिलता है कि लूका इसका और सरल ढंग से इस्तेमाल करना चाहता था। बहुत से आरम्भिक मसीहियों को लगता था कि ये बारह लोग यीशु के नहीं बल्कि यूहन्ना के चेले थे।[5] ''चेला'' शब्द की और व्याख्याएं भी हो सकती हैं। एक टीकाकार ने यह सुझाव दिया: ''इस आयत की सही व्याख्या यह है कि लूका ने यह कहानी मुख्य नायक के दृष्टिकोण से बताई है। पौलुस कुछ ऐसे लोगों से मिला जो उसे चेले लगे।'' व्यक्तिगत तौर पर मेरा मानना है कि पौलुस ने यह मानकर कि ये बारह लोग मसीही *थे* इसी आधार पर उनसे प्रश्न किये थे।[6]

जब ये लोग पौलुस से मिले, तो उसने उनसे पूछा, ''क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?'' (19:2क)। ''विश्वास'' शब्द का इस्तेमाल प्रभु को दिए उनके उत्तर के व्यापक अर्थ में किया गया, जिसमें बपतिस्मा भी शामिल है (आयत 3)। पौलुस उनसे यह नहीं पूछ रहा था कि बपतिस्मा लेते समय उन्हें आत्मा का गैर-चमत्कारी ''साधारण दान'' मिला या नहीं।[7] हर उस व्यक्ति को पवित्र आत्मा मिलता है, जिसका शास्त्र के अनुसार बपतिस्मा हुआ हो।[8] आगे की आयतों से पता चलता है कि उन लोगों से मिलने पर पौलुस का इरादा, यदि उनके पास पहले से ऐसे दान न हों तो उन पर हाथ रखकर उन्हें आश्चर्यकर्म करने के दान देने का था (आयत 6)। इस प्रकार यह प्रेरित वास्तव में यह पूछ रहा था, ''जब तुम मसीही बने तो क्या तुम्हें पवित्र आत्मा का *आश्चर्यकर्म करने का दान* मिला?''

जब उन्होंने उत्तर दिया, ''हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी'' (आयत 2ख) तो वह चकित रह गया। मैं पौलुस के दिमाग़ में घंटियां बजते सुन सकता हूं। अब उसे पता चला (यदि पहले पता नहीं था) कि उनके बपतिस्मे में कुछ गड़बड़ है, क्योंकि यीशु की महान आज्ञा के बपतिस्मे के पवित्र आत्मा से बहुत से सम्बन्ध हैं। मसीही बपतिस्मा पिता, पुत्र, और *पवित्र आत्मा* के नाम से दिया जाता है (मत्ती 28:19)। इस बपतिस्मे से चुनी

हुई आशिषों में दान के रूप में आत्मा का दान मिलना है (प्रेरितों 2:38)। और, इस कारण बपतिस्मा लेने को ''जल और आत्मा से जन्म'' लेना कहा जाता है (यूहन्ना 3:5)।[9]

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यद्यपि ''हमने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी'' बिल्कुल सही अनुवाद हो सकता है, पर इससे उस संदर्भ में जो अर्थ होना चाहिए वह नहीं मिलता। यहां तक कि यदि उन बारह लोगों को केवल यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की शिक्षा का ही पता था, तो उन्हें पवित्र आत्मा के बारे में भी पता होना चाहिए था (मत्ती 3:11)।[10] इस संदर्भ में इसका उत्तर यह है कि यदि पवित्र आत्मा *आ* चुका था, तो उन्हें इसका पता नहीं था। प्रेरितों 19 वाले यूनानी शब्द का अनुवाद ''चर्चा भी नहीं सुनी'' यूहन्ना 7:39 में आत्मा के आने के सम्बन्ध में मिलता है, और वहां इसका अनुवाद ''उतरा था'' है। ASV (NASB से पहले का अनुवाद) में प्रेरितों 19 में उन पुरुषों के शब्दों का यह अनुवाद है, ''नहीं, हमने तो सुना भी नहीं कि पवित्र आत्मा *दिया* गया था।''

पौलुस ने यह जानते हुए कि उनके बपतिस्मे में कुछ गलत था, उन पुरुषों से पूछा, ''तो फिर तुम ने किसका[11] बपतिस्मा लिया?'' (प्रेरितों 19:3क),[12] और उन्होंने उत्तर दिया, ''यूहन्ना का बपतिस्मा'' (आयत 19:3ख)। इन लोगों को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में कहां से पता चला? इस संदर्भ में दिए गए कुछ विवरणों से पता चलता है कि उन्हें अपुल्लोस द्वारा सिखाया और बपतिस्मा दिया गया था। लूका ने वाक्पटु प्रचारक अपुल्लोस के साथ इस कहानी की निकटता के साथ जो ''केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था'' (18:25) बारह पुरुषों का परिचय करवाते समय अपुल्लोस के बारे में बताना उचित समझा (19:1)। और भी बातें सम्भव हैं,[13] परन्तु यह सबसे अधिक सम्भव लगता है। प्रसंगवश, अधिकांश विद्वानों का मत है कि अपुल्लोस का बपतिस्मा पिन्तेकुस्त के दिन (प्रेरितों 2) से *पहले* यूहन्ना के बपतिस्मे के अनुसार हुआ था, परन्तु जिन्हें उसने सिखाया, उनका बपतिस्मा पिन्तेकुस्त के दिन के *बाद* यूहन्ना के बपतिस्मे के अनुसार हुआ था।[14] जे. डब्ल्यू मैक्गर्वे ने लिखा:

> [इन लोगों के दोबारा बपतिस्मे] का अतिसम्भव और एकमात्र उत्तर जो तथ्यों से मेल खाता है, यह है कि उनका बपतिस्मा अपुल्लोस या किसी और ने शिक्षा देकर नहीं किया था, क्योंकि यूहन्ना का बपतिस्मा मान्य आदेश नहीं रह गया था।

रिचर्ड ओस्टर्ड के शब्दों को उधार लें तो ''ये बारह चेले पिन्तेकुस्त के पश्चात के विश्वासी थे जिनके पास पिन्तेकुस्त से पूर्व का निर्देश था।'' एक बार, मैं पुराना नक्शा देखकर कहीं चला गया और रास्ता भटक गया।[15] नक्शे का कोई दोष नहीं था; जिस समय यह बनाया गया, तब तो सही था। समस्या यह थी कि नक्शा पुराना पड़ चुका था और अब इसे सही नहीं कहा जा सकता था। अपनी धार्मिक यात्रा में, ये बारह चेले पुराने पड़ चुके आत्मिक नक्शे को देखकर चल रहे थे।

अधूरी समझ में बढ़ौतरी हुई

इन लोगों की समझ अधूरी थी, इसलिए पहली आवश्यकता इनकी समझ को बढ़ाने की थी। इसलिए पौलुस ने उन्हें समझाया:[16] ''यूहन्ना[17] ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आने वाला है, उस पर अर्थात यीशु पर विश्वास करना'' (19:4)। प्रेरितों के काम की सम्पूर्ण पुस्तक में, लूका ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से प्रवचनों को संक्षिप्त किया, परन्तु इन बारह को पौलुस के निर्देश देने के साथ लूका के व्यवहार को ''संक्षिप्त'' कहना अपर्याप्त है। यहां पर लूका ने एक बार फिर मजबूत वाचा बांधी। यूहन्ना के बपतिस्मा से तो पौलुस ने बात आरम्भ ही की होगी। उसने फिर उन्हें उस सब के बारे में जो यूहन्ना के बाद हुआ, अर्थात यीशु, उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने, उसके स्वर्गारोहण और आत्मा को भेजने, यीशु की कलीसिया स्थापित होने, उसके संगठन और फैलाव के विषय में बताया होगा। उन बारह चेलों द्वारा उसकी बात मानने (आयत 5) से यह भी पता चलता है कि पौलुस ने बड़ी सावधानी से उनके बपतिस्मे के साथ यीशु के नाम से दिए जाने वाले बपतिस्मे की तुलना की होगी।

आज पौलुस का प्रश्न ''क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?'' करिश्माई लोगों का पसंदीदा प्रश्न है। वे इस प्रश्न को पवित्र आत्मा के प्रचार के लिए स्प्रिंग बोर्ड [स्प्रिंग बोर्ड उस तख़्ते को कहते हैं जिस पर से गोताखोर गोता लगाने के लिए छलांग लगाते हैं] की तरह इस्तेमाल करते हैं।[18] परन्तु, पौलुस ने पवित्र आत्मा का प्रवचन देने के बाद केवल प्रश्न ही नहीं किया, बल्कि *यीशु* के बारे में भी बताया। पवित्र आत्मा अपने आपको महिमा दिलाने के लिए नहीं बल्कि यीशु की महिमा करने के लिए आया था (यूहन्ना 16:14)। यूहन्ना प्रेरित के अनुसार, हम अपने जीवनों में आत्मा की उपस्थिति शरीर को घुमाकर या ऊल-जलूल बोलकर नहीं, बल्कि यह मानकर दिखाते हैं ''कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है'' (1 यूहन्ना 4:2)।

अधूरे आज्ञापालन का सुधार

पौलुस द्वारा अपनी बात पूरी करने के बाद, इन बारह पुरुषों ने अपने-अपने ढंग से उत्तर दिए होंगे। प्रेरित की यह बात सुनकर कि उनका बपतिस्मा परमेश्वर को नहीं भाता, वे क्रोधित हो गए होंगे। यदि वे आज के कुछ लोगों की तरह होते, तो उन्होंने कहा होता, ''पर बपतिस्मा तो केवल संकेत के लिए है और निश्चय ही हमें इसके बारे में चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। बपतिस्मा कोई भी हो, बपतिस्मा तो बपतिस्मा ही है।'' उनके उत्तर से उनकी ईमानदारी का पता चल गया। पौलुस की शिक्षा से यह ज्ञात हुआ था कि न केवल उनकी समझ ही अधूरी थी, बल्कि उनके द्वारा जो आज्ञा मानी गई थी, वह भी अपर्याप्त थी। बिना किसी हिचकिचाहट के ''यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया'' (प्रेरितों 19:5)।

इन लोगों के बपतिस्मे के बारे में पढ़कर, हमारे मनों में प्रश्नों की बाढ़ आ जाती है। उनके लिए दोबारा बपतिस्मा लेना क्यों आवश्यक था? यूहन्ना का बपतिस्मा यीशु के नाम

से दिए जाने वाले बपतिस्मे से भिन्न कैसे था?[19] यूहन्ना का बपतिस्मा अमान्य क्यों हो चला था? दूसरे प्रश्न में और प्रश्नों की कुंजी है: यूहन्ना का बपतिस्मा पौलुस द्वारा दिए जाने वाले बपतिस्मे से भिन्न कैसे था?

बहुत से टीकाकार ''इन दो बपतिस्मों में अन्तर'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल करके ऐसी भिन्नता बताते हैं, जो उन्हें लगता है कि बहुत महत्वपूर्ण है। परन्तु, बहुत सी भिन्नताएं स्पष्ट हैं या उनका पता चल जाता है। (पृष्ठ 97 पर चार्ट देखिए।) आइए पवित्र आत्मा के बारे में पौलुस के प्रश्न से आरम्भ करते हैं (आयत 2): यूहन्ना के बपतिस्मे में पवित्र आत्मा की कोई प्रतिज्ञा नहीं थी, जबकि ग्रेट कमिशन अर्थात यीशु की आज्ञा वाले बपतिस्मे में यह प्रतिज्ञा थी (प्रेरितों 2:38)।

फिर से, पौलुस ने यूहन्ना के बपतिस्मे को ''मनफिराव का बपतिस्मा'' (19:4) कहा; अन्य शब्दों में, इससे मनफिराव का पता चलता था। दूसरी ओर, मसीही बपतिस्मे को ''विश्वास का बपतिस्मा'' कहना बेहतर होगा, जिसमें विश्वास का, विशेषकर यीशु की मृत्यु, उसके गाड़े जाने, और पुनरुत्थान में हमारे विश्वास का पता चलता है (रोमियों 6:3, 4)। जब लोगों ने यूहन्ना का बपतिस्मा लिया, तो उन्होंने अपने पापों को माना (मरकुस 1:5); यीशु का बपतिस्मा लेने से पहले, वे यीशु में *अपने विश्वास* का अंगीकार करते हैं (प्रेरितों 8:37[20])।

सम्भवत: पौलुस के कथन में अति महत्वपूर्ण अन्तर यह है कि ''यूहन्ना ने यह कहकर मनफिराव का बपतिस्मा दिया, कि *जो मेरे बाद आने वाला है* ...'' (प्रेरितों 19:4)। यूहन्ना के चेलों का विश्वास उन्हें आने वाले मसीह की ओर *आगे* को देखने का इशारा करता था, जबकि हमारा विश्वास उसकी ओर *पीछे* को देखने का इशारा करता है जो हमारे लिए मरा (गलतियों 2:20)। क्योंकि यूहन्ना के चेले जिस आने वाले की राह देख रहे थे, वे उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान से अज्ञात थे जो कि सुसमाचार का सार है (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। अत:, उनका बपतिस्मा मसीही बपतिस्मे की तरह (रोमियों 6:5) ''उसकी मृत्यु की समानता में'' और ''उसके जी उठने की समानता में'' नहीं था। वे यीशु की मृत्यु के साथ बपतिस्मे के सम्बन्ध को बिल्कुल भी नहीं जानते थे (रोमियों 6:3)। उन्हें यह भी मालूम नहीं था कि बपतिस्मा लेने पर उनके पाप यीशु के लहू में धोए जा सकते हैं (प्रेरितों 22:16[21])।

अन्तत:, यह तथ्य कि उन बारह ने ''प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया'' (आयत 5) हमें स्मरण दिलाता है कि स्पष्ट तौर पर यूहन्ना के बपतिस्मे के साथ कोई नाम नहीं जुड़ा था। इसके विपरीत, महान आज्ञा का बपतिस्मा ''पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा'' (मत्ती 28:19) के पवित्र नाम से दिया जाता है।[22]

वास्तव में, इन दोनों बपतिस्मों को और निकटता से जांचने पर, हमें पता चलता है कि उनमें कुछ समानताएं थीं; दोनों ही जल में डुबोकर (यूहन्ना 3:23; मत्ती 3:16; प्रेरितों 8:38[23]), और ''पापों की क्षमा के लिए'' (मरकुस 1:4; लूका 3:3; प्रेरितों 2:38[24]) होते थे। चाहे यह तुलना बहुत संक्षिप्त थी, परन्तु इससे यह संदेह नहीं रहना चाहिए कि इन लोगों को दूसरी बार ''यीशु के नाम का'' बपतिस्मा लेने की आवश्यकता क्यों थी?

यूहन्ना द्वारा दिया जाने वाला बपतिस्मा		यीशु के अधिकार से बपतिस्मा
जल में डुबोकर		जल में डुबोकर
तैयारी का बपतिस्मा		पूर्णता का बपतिस्मा
मन फिराव के प्रचार से		सुसमाचार के प्रचार से
मसीह (और क्रूस) की ओर आगे को देखता था		मसीह (और क्रूस) की ओर पीछे देखता है
पापों का अंगीकार करके		मसीह का अंगीकार करके
किसी नाम से नहीं दिया जाता था		पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से
पापों की क्षमा के लिए		पापों की क्षमा के लिए
पवित्र आत्मा की कोई प्रतिज्ञा नहीं		पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा

यूहन्ना द्वारा दिये जाने वाले बपतिस्मे और यीशु के अधिकार से दिये जाने वाले बपतिस्मे की एक तुलना

यह बात महत्वपूर्ण है कि शास्त्र यह नहीं कहता कि इन बारह चेलों को ''दोबारा बपतिस्मा'' दिया गया था।[25] ''दोबारा बपतिस्मे'' के बारे में बाइबल कुछ नहीं कहती। यदि किसी को वचन के अनुसार डुबोया गया है, तो उसका बपतिस्मा हुआ है। उसे अपने पापों की क्षमा मिल गई है, वह प्रभु की कलीसिया में मिलाया गया है और उसे फिर से बपतिस्मा लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। दूसरी ओर, हो सकता है किसी ने उस प्रक्रिया को पूरा किया हो जिसे बपतिस्मा *कहा जाता है,* यदि वह नये नियम के नमूने से मेल नहीं खाती, तो *उसका बपतिस्मा नहीं हुआ है;* वह केवल नहाया ही है। ऐसे व्यक्ति को फिर से पहली और अन्तिम बार बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है।[26]

बपतिस्मा लेने के बाद, इन बारह लोगों का इफिसुस के छोटे से समूह की संगति में स्वागत किया गया होगा। इस आनन्ददायक अवसर पर, आखिर पौलुस की मंशा पूरी हो गई, जो उसके मन में उन लोगों से मिलकर उठी थी। ''और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यवाणी करने लगे'' (19:6)।[27] पौलुस ने मसीहियों पर हाथ रख कर वही किया जो पतरस और यूहन्ना ने सामरिया में आकर किया था।[28] प्रेरित मसीहियों को आश्चर्यकर्म करने के दान देने के लिए उन पर अपने हाथ रखा करते थे।[29] इन दानों से मसीहियों को लिखित नये नियम की अनुपस्थिति में प्रेरितों के न होने पर कलीसिया के रूप में काम करने की योग्यता मिल जाती थी।

एक प्रश्न रह जाता है कि लूका ने यह बात क्यों कही कि पौलुस ने इन लोगों पर हाथ रखे और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने लगे? स्पष्टतया पौलुस नये मसीहियों पर हाथ रखा करता था (2 तीमुथियुस 1:6), किन्तु लूका ने इस सम्बन्ध में पहली बार यहीं पर बताया है। उदाहरण के लिए, पौलुस ने कुरिन्थुस में अपनी सेवकाई के समय बहुत से लोगों पर भी हाथ रखे जिससे कई लोग भिन्न-भिन्न भाषा बोलने लगे थे (1 कुरिन्थियों 1:7; 12:10), पर लूका ने उसका उल्लेख नहीं किया। फिर उसने इसके बारे में यहां क्यों बताया? शायद लूका सामरिया में पतरस के काम की समानता उससे कर रहा था जो इफिसुस में पौलुस ने किया,[30] हो सकता है कि यह तथ्य इस बात पर ज़ोर देने के लिए दर्ज किया गया हो कि दोबारा बपतिस्मा लेने वाले इन लोगों को बिना किसी रुकावट के इफिसुस की कलीसिया में स्वीकार कर लिया गया जबकि प्रेरितों 8 में प्रेरितों के हाथ रखने से यह पता चला कि सामरियों को स्वीकार कर लिया गया था।[31] रिचर्ड ओस्टर्ड ने कहा:

> प्रेरितों के काम में भाषाएं बोलने से जुड़ी यह तीसरी घटना थी। इन तीनों बार की घटना कलीसिया में नये समूहों के महत्वपूर्ण मिलन के संदर्भ में पवित्र आत्मा पर शिक्षा से सम्बन्धित है (2:4; 10:46; 19:5)।

प्रासंगिकता से जूझना

इफिसुस में पौलुस काम का अच्छा आरम्भ करने वाला था। अगले पाठ में, हम

महान नगर में पौलुस की सेवकाई का अध्ययन जारी रखेंगे। परन्तु, यह पाठ समाप्त करने से पहले, हमें देखना है कि प्रेरितों 19:1-7 की कहानी की प्रासंगिकता को इससे जोड़ सकते हैं या नहीं। यदि हां तो कैसे।

कई लोगों का मानना है कि इसकी कोई प्रासंगिकता नहीं होनी चाहिए। वे यह मुद्दा उठाते हैं (जहां तक हमें पता है) कि आज किसी को भी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का बपतिस्मा नहीं दिया जाता है। परन्तु, यह असम्भव लगता है कि लूका ने वह कहानी केवल स्थान भरने के लिए ही शामिल की हो; परमेश्वर अवश्य ही चाहता था कि हम इससे कुछ शिक्षा लें। पिछले पाठ में, हमने अपुल्लोस की कहानी से कई प्रासंगिकताएं बनाई थीं, जो केवल यूहन्ना के बपतिस्मे की बात जानता था। यदि हम उस कहानी को लागू कर सकते हैं, तो निश्चय ही हम इस कहानी को भी लागू कर सकते हैं।

यदि प्रेरितों 19:1-7 की कोई प्रासंगिकता बनानी हो, तो यह ऐसे हो: कई बार ''बपतिस्मा'' बपतिस्मा नहीं होता।[32] ऐसे अवसर भी आएंगे जब किसी ने डुबोये जाकर उस संस्कार को पूरा किया होगा जिसे बपतिस्मा कहा जाता है। आज यूहन्ना के बपतिस्मे की तुलना नहीं मिलती, इसलिए यह कहना कठिन होता है कि सभी मामलों में इसकी आवश्यकता पड़ती है। फिर भी, किसी भी प्रासंगिकता के आरम्भ के लिए यह सत्य जरूरी है कि बपतिस्मे की हर रीति को बपतिस्मा नहीं कहा जाता।

परिचर्चा आरम्भ करने के लिए आइए पूछते हैं, ''बपतिस्मे को वचन के अनुसार बनाने के लिए क्या आवश्यक है ?'' प्रेरितों के काम में अपने अध्ययन के आधार पर, हमारा उत्तर सरल सा है: ''यह सही ढंग से, सही व्यक्ति का, और सही उद्देश्य के लिए होना चाहिए।'' *सही ढंग* पानी में डुबोना है। ''बपतिस्मा'' शब्द यूनानी शब्द का लिप्यान्तरण है जिसका अक्षरश: अर्थ ''डुबोना'' है।[33] प्रेरितों 8 में जिस व्यक्ति का बपतिस्मा हुआ था वह पानी में गया और बपतिस्मा लेकर बाहर आया था (पद 38, 39)। *सही व्यक्ति* वह है जो अपने जीवन को व्यक्तिगत तौर पर अर्पित करने के लिए परिपक्व हो, प्रभु में विश्वास करता हो, पापों से मन फिरा लिया हो, और मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करने का इच्छुक हो (2:37, 38; 8:37)। प्रेरितों के काम की पुस्तक शिशुओं के बपतिस्मे का अधिकार नहीं देती। *बपतिस्मा लेने का सही उद्देश्य* पापों की क्षमा (2:38; 22:16) पाना, पवित्र आत्मा को दान के रूप में पाना (2:38) और प्रभु की कलीसिया का सदस्य बनना है (2:41, 47[34])।

इसकी प्रासंगिकता को सिद्ध करने के लिए, पहली दो शर्तें सही ढंग तथा सही व्यक्ति कोई अनुचित अड़चन नहीं डालतीं। किसी को पानी में डुबोकर बपतिस्मा दिया गया या नहीं, वह इतना बड़ा था कि व्यक्तिगत तौर पर समर्पण कर सके या नहीं।[35] इस कारण, यद्यपि यह बात ''मसीही जगत'' के बहुत बड़े भाग को लज्जित करने वाली लगे, परन्तु यदि किसी व्यक्ति को बचपन में पानी छिड़ककर बपतिस्मा दिया गया था, तो नये नियम के अनुसार उसे अभी बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है।

इस विषय में उलझन तब होती है जब इसके उद्देश्य की बात आती है। हम इस प्रश्न

से जूझते हैं कि यह जानने के लिए किसी को पहले से क्या पता और समझ होनी चाहिए कि उसका बपतिस्मा वचन के अनुसार हो रहा है या नहीं। उद्देश्य का प्रश्न जटिल है या नहीं, परन्तु यह प्रेरितों 19:1–7 से बनने वाली किसी भी प्रासंगिकता में प्रमुख है। ये बारह पुरुष प्रौढ़ व्यक्ति (आयत 7) (अर्थात बपतिस्मा लेने के लिए सही लोग) थे जिन्हें जल में बपतिस्मे के लिए डुबकी दी गई थी (सही ढंग)। मूलत: उनके बपतिस्मे में उद्देश्य की बात कही कई थी। उन्हें यीशु के लोहू के साथ बपतिस्मे के सम्बन्ध की बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी; उनका बपतिस्मा पवित्र आत्मा का दान पाने के लिए नहीं हुआ था। उन्हें प्रभु की कलीसिया का सदस्य बनने के लिए जल में नहीं डुबोया गया था।

उद्देश्य पर बात करते हुए, हमें इसको अति सरल बनाने से बचने की कोशिश करनी चाहिए। कोई बपतिस्मे के किसी एक उद्देश्य के महत्व पर ज़ोर देने के प्रलोभन में पड़ सकता है। उदाहरण के लिए, मैंने लोगों को यह कहते हुए सुना है कि यदि किसी का ''पापों की क्षमा के लिए'' डुबोकर बपतिस्मा हुआ, तो उसका बपतिस्मा सही था। याद रखें कि इन बारह चेलों को ''पापों की क्षमा के लिए'' (मरकुस 1:4) बपतिस्मा दिया गया था, किन्तु इन्हें फिर भी दोबारा डुबोकर बपतिस्मा देने की आवश्यकता थी।[36]

इसके उदाहरण के लिए कि इस प्रश्न को अति सरल बनाना कितना आसान है कुछ लोगों का यह निष्कर्ष है कि जब तक बपतिस्मा लेने वाला ''यीशु के नाम का'' (आयत 5) ऐलान करता है, तब तक उसका बपतिस्मा वचन के अनुसार है। ''यीशु के नाम से'' बपतिस्मा लेने का अर्थ केवल यीशु के नाम को सहायतार्थ बुलाना ही नहीं, बल्कि अन्य बातों के साथ, यीशु के अधिकार से बपतिस्मा लेना है।[37] जो बपतिस्मा यीशु द्वारा अधिकृत बपतिस्मे से भिन्न है, वह ''यीशु के नाम से'' नहीं हो सकता, चाहे उस संस्कार के एक भाग में उसके नाम का ही इस्तेमाल क्यों न किया जाता हो।

बपतिस्मा लेने के किसी के उद्देश्य को तय करने की चुनौती यह है कि हम यह खोज करने की कोशिश में हैं कि उस व्यक्ति के मन में उस समय क्या था, और यही जानना कठिन है। ''मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उस में है ?'' (1 कुरिन्थियों 2:11क)। दूसरी ओर इब्रानियों की पत्री के लेखक ने कहा कि ''*परमेश्वर का वचन ...* मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है'' (इब्रानियों 4:12)। इसलिए, जब हम बपतिस्मे के उद्देश्य के बारे में *वचन* की तुलना मनुष्यों के उद्देश्यों से करते हैं, तो ठीक रहता है।

वर्षों से मैं पुरुषों तथा महिलाओं के साथ बाइबल अध्ययन करता आ रहा हूं, मैंने उनसे बपतिस्मे के लिए मनुष्य के बनाए दूसरे कारण सुने हैं। कइयों को बपतिस्मा ''केवल इसलिए दिया गया क्योंकि दूसरों ने भी लिया था।'' कइयों ने दूसरों को प्रसन्न करने के लिए बपतिस्मा लिया। कइयों ने बपतिस्मा इसलिए लिया क्योंकि उनके लिए अपनी पसन्द की साम्प्रदायिक कलीसिया में शामिल होने की यह एक शर्त थी। कइयों को यह बताया गया कि उनके बपतिस्मे का एकमात्र उद्देश्य उनकी आन्तरिक शुद्धता का ''बाहरी चिह्न'' होगा। बहुत से लोगों को यह पक्का पता नहीं है कि उन्होंने बपतिस्मा क्यों लिया, ''परन्तु लेना ज़रूरी था''इसलिए उन्होंने भी ले लिया।[38]

किसी के साथ अध्ययन करते समय, मैं बाइबल के बपतिस्मे की तुलना (इसके उद्देश्य समेत) अपने छात्र के बपतिस्मे से करता हूं। छात्र को ही अन्तिम निर्णय लेना है कि उसे बपतिस्मा (या दोबारा बपतिस्मा) लेने की आवश्यकता है या नहीं, क्योंकि अपने मन को केवल वही जानता है। गहन अध्ययन के बाद, मेरे बहुत से छात्र निर्णय लेते हैं कि आज्ञाकारिता को पूरा करने के लिए, उन्हें बपतिस्मा लेना आवश्यक है।

मैं जल्दी से यह कह दूं कि मैं यह ज़ोर नहीं दे रहा कि वचन के अनुसार बपतिस्मा लेने से पहले किसी को बपतिस्मे के बारे में *सब कुछ* पता होना चाहिए; न ही मैं यह कह रहा हूं कि यदि बपतिस्मे के बारे में किसी के विचार या समझ वर्षों बाद प्रौढ़ होते हैं, तो इसका अर्थ यह है कि उसका बपतिस्मा वचन के अनुसार नहीं हो रहा है। रोमियों 6:3-6 में पौलुस की बातों से रोम के मसीहियों को बपतिस्मे के महत्व पर नई अन्तर्दृष्टि मिली। दूसरी ओर, बपतिस्मा लेकर हम ''मन से ... मानने वाले'' (देखिए रोमियों 6:3, 4, 17, 18) हो जाते हैं, इसलिए समर्पण के लिए हमें यह समझ होनी चाहिए कि वचन के अनुसार बपतिस्मा लेने के लिए क्या आवश्यक है।

सच कहता हूं, मनुष्य के बनाए हुए आज के उन संस्कारों के बढ़ने से जिन्हें बपतिस्मा कहा जाता है, यह जानने में बड़ी उलझन पैदा हो गई है कि किसी का बपतिस्मा वचन के अनुसार हुआ है या नहीं। परन्तु, मेरा मानना है कि आज की स्थिति उससे भिन्न नहीं है जैसी पौलुस ने इफिसुस में देखी थी। मसीही बपतिस्मे के साथ यूहन्ना के पुराने पड़ चुके बपतिस्मे से पौलुस के समय भी यह मामला उलझ गया था। उन बारहों का मानना था कि उनका बपतिस्मा हो चुका है; यह भी सम्भव है कि कई मसीही मानते हों कि उन बारह लोगों का बपतिस्मा हुआ था।[39] इस उलझन को दूर करने के लिए पौलुस ने यूहन्ना के बपतिस्मे के साथ महान आज्ञा के बपतिस्मे को रखकर उन दोनों की तुलना की। हमें भी आज यही ढंग अपनाना चाहिए।

सारांश

इन बारह लोगों की कहानी से जिन्हें फिर से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता थी, दो स्पष्ट प्रासंगिकताएं निकलती हैं: (1) हमें शिक्षा देते समय लोगों को स्पष्ट बता देना चाहिए, चाहे उससे किसी की भावनाओं को ठेस लगने की सम्भावना ही क्यों न हो। पौलुस ने इन बारह लोगों को यह बताने में कोई हिचकिचाहट नहीं की कि उनके बपतिस्मे में कुछ गड़बड़ है। यदि हमारे सुनने वाले शुद्ध मन हैं, तो वे परमेश्वर के वचन को वैसे ही स्वीकार करेंगे जैसे हम इसे देते हैं।[40] (2) हम में से हर एक को अपनी धार्मिक रीतियों की तुलना बाइबल की शिक्षाओं से करके, उन्हें बाइबल की शिक्षा के अनुसार लागू करने के लिए जो भी समझौता करना पड़े, करना चाहिए चाहे इससे हमें बुरा ही क्यों न लगे। ये बारह लोग ऐसा करने के इच्छुक थे। क्या हम हैं?

इस पाठ को समाप्त करते हुए, मैं हर एक को विशेष रूप से उत्साहित करूंगा कि वह अपने बपतिस्मे की जांच वचन की रोशनी में करे। स्वर्ग बहुत ही अद्‌भुत जगह है

और नरक बहुत ही भयानक। अनन्तकाल इतना लम्बा समय है कि हम अपने प्राणों का जोखिम नहीं उठा सकते। यदि आपका बपतिस्मा पूरी तरह नये नियम से मेल नहीं खाता तो मैं आपसे बिनती करता हूं कि आप अभी उसमें सुधार कर लें!

विज़ुअल-एड नोट्स

पुराने पड़ चुके नक्शे का उदाहरण देने के लिए आप अपने पास कोई गन्दा सा फटा पुराना नक्शा रख लें। यदि आप चाहें, तो प्रासंगिकता बनाने के लिए थोड़ा रुक सकते हैं: कई लोग पुराने नियम के पुराने नक्शे का इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं (इब्रानियों 8:7; 10:9); अन्य अपने ही विचारों के पुराने नक्शे (अर्थात, अज्ञानता पर आधारित निष्कर्ष, प्रेरितों 17:30) का प्रयोग करने की कोशिश करते हैं ।

यूहन्ना के बपतिस्मे के साथ महान आज्ञा के बपतिस्मे की तुलना के लिए अच्छा ढंग पृष्ठ 97 पर चार्ट ''यूहन्ना द्वारा दिए जाने वाले बपतिस्मे की यीशु द्वारा अधिकृत बपतिस्मे से तुलना'' का इस्तेमाल हो सकता है। आप इसे किसी बड़े बोर्ड पर लिख सकते हैं। शास्त्र में से आयतें जोड़ने के लिए पाठ को अच्छी तरह पढ़ लें।

बपतिस्मे के सभी तीन तत्वों (ढंग, व्यक्ति, और उद्देश्य) की आवश्यकता पर बोलने के लिए किसी वस्तु का पाठ सहायक हो सकता है। यदि आपको तीन टांगों वाला कोई स्टूल मिल जाए, तो उसे उठा लें और पूछें, ''इनमें से कौन सी टांग आवश्यक है, और कौन सी अनावश्यक?'' ये तीनों ही आवश्यक हैं; यदि इनमें से एक भी टूट जाए, तो यह स्टूल किसी काम का नहीं रहेगा। इसकी तुलना बपतिस्मे के लिए वचन की शर्तों में से किसी एक के टूट जाने के साथ कीजिए। (आप उस स्टूल की एक टांग पकड़कर हिला दें। जब आप एक टांग के निकलने की बात करें तो स्टूल की एक टांग खींच लें। कोई उस स्टूल पर जिसकी एक टांग आपने निकाल दी थी, बैठने की कोशिश कर सकता है।) चित्रों द्वारा समझाने के लिए एक और सम्भावित विज़ुअल-एड नम्बरों वाला ताला हो सकता है। ध्यान दें कि नम्बरों वाले उस ताले को खोलने के लिए तीन नम्बरों को मिलाना आवश्यक है। इस बात पर ज़ोर दें कि ताला खोलने के लिए उन तीनों नम्बरों को मिलाना आवश्यक हो सकता है। इसी प्रकार, वचन के अनुसार बपतिस्मा लेने के लिए ये तीनों शर्तें पूरी होनी चाहिए ताकि वह परमेश्वर को अच्छा लगे।

प्रवचन नोट्स

मेरे मित्र मार्क क्लेयरडे ने प्रेरितों 19 पर प्रचार करते हुए ''सफल कलीसिया की तीन बातें'' बोलने के लिए 1 से 20 आयतों का प्रयोग किया। उसके संदेश से मेरे मन में ''एक कलीसिया कैसे बढ़े'' पर एक नया विचार मिला। मार्क एक अच्छा माली है, इसलिए मैं इस विचार को बागवानी के साथ मिलाऊंगा: (1) यह सुनिश्चित कर लें कि

बीज शुद्ध हैं (पद 1-7)। (2) बोने में कंजूसी न करें (पद 8-10)। (3) बुआई से पहले भूमि को अच्छी तरह से तैयार कर लें (पद 11, 12)। (4) घास-फूस निकालने के लिए मेहनत करें (पद 13-20)!

प्रेरितों के काम की पुस्तक में मन परिवर्तनों की शृंखला के एक भाग के रूप में उन बारह लोगों की कहानी भी हो सकती है जिन्हें दोबारा बपतिस्मा लेने की आवश्यकता थी। इस प्रकार का पाठ 19:1 तक जाने के लिए तीसरी यात्रा के आरम्भ पर पड़ी मैल को उतार देगा (जैसे लूका ने किया)। इस पाठ का शीर्षक (''बपतिस्मा कब बपतिस्मा नहीं होता?'') उस पाठ के लिए उपयुक्त होगा। इसका वैकल्पिक शीर्षक ''बारह चेलों का मनपरिवर्तन जिन्हें बपतिस्मा लेने की आवश्यकता थी'' भी हो सकता है। यदि इस शीर्षक का इस्तेमाल किया जाए, तो टिप्पणियां स्पष्ट रूप से शीर्षक से मेल न खाने वाली अर्थात क्या उन ''चेलों'' को जिन्होंने ''बपतिस्मा लिया'' हुआ था, मनपरिवर्तन की आवश्यकता थी, पर केन्द्रित होतीं? हमारे अगले पाठ के अनुसार तो, ऐसा ही था।

तीतुस पर भी एक अतिरिक्त संदेश दिया जा सकता है, जिसके नाम का उल्लेख लूका ने कभी नहीं किया लेकिन वह पौलुस के काम के लिए उसका बहुमूल्य सहयोगी था। एक सम्भावित शीर्षक होगा ''प्रेरितों के काम में अदृश्य आदमी।'' इस शृंखला में तीतुस के बारे में बाद के पाठों में और बात करेंगे।

पाद टिप्पणियां

[1]इन आयतों को अच्छी तरह समझने के लिए, इस पाठ के बाद अतिरिक्त लेख ''अपने भाइयों को स्थिर कैसे करें'' देखिये। [2]प्रेरितों 18:27 ''भाइयों ने'' का उल्लेख करता है। [3]लूका ने ''*बारह* पुरुष'' कहा, इसलिए मैं मान लेता हूं कि ग्यारह या तेरह हो सकते थे। [4]शायद अक्विला और प्रिस्किल्ला इन लोगों को जानते थे, परन्तु या तो उनको यह समझ नहीं आ रही थी कि उनके साथ बात को आगे कैसे बढ़ाएं या वे उस प्रकार से उन्हें शिक्षा देने में कम सफल हुए थे जैसे उन्होंने अपुल्लोस को सिखाया था, इस कारण उन्होंने मामलों को सुलझाने में पौलुस के आने की प्रतीक्षा की थी। [5]इस व्याख्या को सबसे पहले लिखने वालों में से चौथी शताब्दी का जॉन क्रिसोस्टाम था। [6]दूसरी ओर, यदि पौलुस उन लोगों को जानता था और उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, जो प्रश्न उसने उनसे पूछे उनके द्वारा उनकी आत्मिक आवश्यकताओं को सामने लाना था। पाठ में, मैं यह मानकर आगे बढ़ूंगा कि पौलुस को पहले उनकी पृष्ठभूमि का पता *नहीं था।* [7]इस कथन में यह माना जाता है कि पौलुस को उनकी आत्मिक पृष्ठभूमि का पता नहीं था। पिछली पाद टिप्पणी देखिये। [8]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 79 पर प्रेरितों 2:38 पर नोट्स देखिये। ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 185 पर ''पवित्र आत्मा क्या करता है?'' पर अतिरिक्त अध्ययन देखिये। [9]पौलुस ने आमतौर पर मन परिवर्तन को आत्मा के साथ जोड़ा अर्थात एक मसीही बनना और ''आत्मा को पाना'' एक ही बात थी (गलतियों 3:2)। उद्धार पाने वाले पर, आत्मा की ''छाप'' लग जाती थी (इफिसियों 1:13)। [10]फिर, यदि उन्हें पुराने नियम के बारे में कुछ भी पता होता, तो उन्हें पवित्र आत्मा का भी पता होना था, क्योंकि उस नियम में कई बार परमेश्वर के पवित्र आत्मा की बात की गई थी (भजन संहिता 51:11; यशायाह 63:11)।

[11]''किसका'' यूनानी शास्त्र का अक्षरश: अनुवाद है, जो हमें याद दिलाता है कि बपतिस्मा मसीही लोगों को ''*मसीह* में'' लाता है (रोमियों 6:3, 4; गलतियों 3:27)। [12]ध्यान दें कि पौलुस ने अपने आप ही मान लिया कि उन्होंने बपतिस्मा लिया हुआ था। एफ.एफ. ब्रूस ने *द बुक ऑफ ऐक्ट्स* में लिखा ''नये

नियम में बिना बपतिस्मा लिए हुए विश्वासी का विचार मिलना बड़ा कठिन है।'' [13]उदाहरण के लिए, अपुल्लोस और इन बारह पुरुषों को उन्हीं लोगों ने सिखाया और बपतिस्मा दिया होगा जो शायद उस क्षेत्र में घूमने वाले यूहन्ना के कुछ चेलों में से थे। यदि ऐसा था, तो सम्भवतया उन बारह की तरह अपुल्लोस के लिए भी फिर से बपतिस्मा लेना आवश्यक था (इस भाग में ''एक प्रचारक जिसकी प्रशंसा किए बिना मैं नहीं रह सकता'' पाठ देखिये)। [14]जैसे पिछली पाद टिप्पणी में कहा गया था, और सम्भावनाएं हैं, परन्तु यह सबसे सरल व्याख्या है कि स्पष्ट रूप से अपुल्लोस को फिर से बपतिस्मा क्यों नहीं लेना पड़ा, जबकि उन बारह को लेना पड़ा था। (फिर से, इस भाग में ''एक प्रचारक जिसकी प्रशन्सा किए बिना मैं नहीं रह सकता'' पाठ देखिये)। [15]उदाहरण के रूप में व्यक्तिगत अनुभव से उपहासजनक, दुखद और निराश करने वाली बातें बताई जा सकती हैं। [16]पौलुस ने इन लोगों को *गलत* शिक्षा देने वालों को फटकारने में समय नहीं गंवाया; बल्कि, उसने उन्हें *सच्चाई* की शिक्षा देने में समय लगाया। [17]बाइबल में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का यह अंतिम उल्लेख है। [18]विशेष रूप से, वे आत्मा के आश्चर्यकर्म करने के दानों पर प्रचार करते हैं, जो उन्हें लगता है कि आज भी है। [19]विभिन्नता लाने के लिए, मैं पौलुस (और आज) के समय में मान्य ''एक बपतिस्मे'' के वर्णन के लिए कई शब्दों का इस्तेमाल करता हूं, जैसे यीशु के नाम का बपतिस्मा, मसीही लोगों द्वारा दिए जाने वाला बपतिस्मा, ग्रेट कमिशन अर्थात यीशु की आज्ञा वाला बपतिस्मा, मसीही बपतिस्मा, यीशु का बपतिस्मा आदि। इन सभी से ग्रेट कमिशन में मिले उस बपतिस्मे का पता चलता है (मत्ती 28:19; मरकुस 16:16), जिसका प्रचार पहली बार पिन्तेकुस्त के दिन किया गया था। (प्रेरितों 2:38)। [20]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में पृष्ठ 78 पर प्रेरितों 2:37 पर नोट्स देखिये।

[21]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में ''प्रभु के लिए सब कुछ दांव पर लगाना'' पाठ में प्रेरितों 22:16 पर नोट्स देखिये। [22]प्रभु ''के नाम से'' कुछ करने के महत्व के बारे में, ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 112 पर ''उसी के नाम से'' पाठ के आरम्भ में देखिये। [23]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में ''एक आदर्श मन परिवर्तन'' पाठ में प्रेरितों 8:38 पर नोट्स तथा ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 199 पर शब्दावली में ''बपतिस्मा'' देखिये। [24]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में ''तीन हजार का उद्धार कैसे हुआ'' पाठ में प्रेरितों 2:38 पर नोट्स देखिये। मरकुस 1:4 और लूका 3:3 में ''के लिए'' शब्द प्रेरितों 2:38 में ''के लिए'' शब्द की तरह यूनानी उपसर्ग eis से लिया गया है। [25]यूनानी शब्द के अनुवाद ''बपतिस्मा'' का अक्षरश: अर्थ ''डुबोना'' है, इसलिए मेरे लिए उतना संक्षेप में बताना कठिन है जितना मैं चाहता हूं। मैं उस संस्कार में जिसे ''बपतिस्मा'' *कहा जा* सकता है और बाइबल के सही बपतिस्मे में अन्तर करने का यत्न कर रहा हूं। इन बारह पुरुषों को पहले (यूहन्ना के बपतिस्मे में) डुबोया गया था और अब दूसरी बार उन्हें (यीशु के नाम में) डुबोया गया था, इसलिए मैंने पाठ में कई बार ''दोबारा बपतिस्मा'' शब्द का इस्तेमाल किया है। परन्तु, उन्होंने प्रभु यीशु के आज्ञा से दिए गए बपतिस्मे को केवल *एक ही बार* लिया। तालाब में खेलते और एक-दूसरे को डुबोते बच्चों का उदाहरण देकर, कई बार इसे ''बपतिस्मा'' कहा जाता है (हां बच्चों को ऐसी खेलें आती ही हैं)। जो कुछ उन्होंने किया उसे ''डुबकी'' तो कहा जा सकता है, परन्तु यह बाइबल के ''बपतिस्मे'' से कदापि मेल नहीं खाता। [26]इस पर और अध्ययन के लिए, इस पाठ के अगले भाग में ''प्रासंगिकता से जूझना'' शीर्षक के नीचे परिचर्चा देखिये। [27]इस भाग में ''भाषाएं बोलना'' पर पाठ देखिये। [28]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में ''एक जादूगर का मनपरिवर्तन'' पाठ में प्रेरितों 8:17, 18 पर नोट्स देखिये। [29]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 185 पर ''पवित्र आत्मा क्या करता है ?'' वाला अतिरिक्त लेख देखिये। [30]लूका ने पतरस के काम और पौलुस के काम में बहुत सी समानताएं दिखाईं। यहां कुछ उदाहरण हैं: एक लंगड़े आदमी का चंगा होना, दुष्टात्माओं को निकालना, जेल से छूटना, मुर्दे को जिलाना। यह दिखाने के लिए परमेश्वर उत्तराधिकारी के साथ भी वैसे ही है जैसे वह पूर्वाधिकारी के साथ था (उदाहरणार्थ, मूसा तथा यहोशू, एलिय्याह तथा अलीशा) पवित्र शास्त्र का यही ढंग है।

[31]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 52 से आरम्भ होने वाले पाठ में सामरियों के मनपरिवर्तन पर नोट्स देखिये। [32]जैसे पाद टिप्पणी क्रम 25 में कहा गया था, मेरे लिए उतना संक्षेप में बताना कठिन है जितना मैं चाहता हूं। जिसे ''बपतिस्मा'' *कहा जाता है* परन्तु वास्तव में वह शास्त्र के अनुसार बपतिस्मा नहीं है,

उसे लिखने के लिए मैं ''बपतिस्मा'' शब्द को हर बार कहने के लिए उद्धरण चिह्नों में रख सकता हूं, परन्तु यह बहुत ही भद्दा लगता है। मेरा मानना है कि संदर्भ से ही स्पष्ट हो जाएगा कि मैं ''बपतिस्मा'' शब्द का इस्तेमाल किसी मानव निर्मित संस्कार के लिए कर रहा हूं या प्रभु की आज्ञा अनुसार दिए गए बपतिस्मे के लिए। [33] ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 199 पर शब्दावली में ''बपतिस्मा'' देखिये। [34] ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 95 पर प्रेरितों 2:47 पर नोट्स देखिये। [35] निश्चय ही, यदि कोई इतना बड़ा हो गया कि वह व्यक्तिगत रूप से समर्पण कर सकता है, तो यह प्रश्न फिर रह जाता है कि क्या उसने बपतिस्मा लेने से पहले सच्चे मन से विश्वास करके मन फिराया है या नहीं। [36] विभिन्न सम्प्रदायों, जिनमें मॉरमन्ज़ भी शामिल हैं, में वयस्कों को पापों की क्षमा के लिए डुबकी दी जाती है, परन्तु मैं उनके बपतिस्मे को स्वीकार करने की ओर ध्यान नहीं देता। अन्य त्रुटियों में, इनमें से कई सम्प्रदाय यीशु को गलत ढंग से प्रस्तुत करते हैं। [37] इसकी तुलना ''*कानून के नाम* से खोलो'' से कीजिये। ''यीशु के नाम से'' कुछ करने के महत्व के और अध्ययन के लिए ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के दस से बारह ''चंगाई की एक घटना'' से ''जब शैतान मुश्किल में डाल दे'' पाठ देखिये। [38] ऊपर दिया गया उद्देश्य वयस्कों के डुबोने से जुड़ा हुआ है। ''नवजात शिशुओं को बपतिस्मा'' देने वालों के पास ''बालक को नरक से बाहर रखने'' से लेकर ''बालक को मसीही नाम देने के लिए सुखद समारोह'' जैसे कई बहाने हैं। [49] यह सम्भावना दिखाई देती है कि पौलुस के आने तक, इफिसुस के मसीही, शायद अक्विला और प्रिस्किल्ला भी उनके बपतिस्मे को सही मानते थे। [40] मैं यह मानकर चल रहा हूं कि हम ''प्रेम में सच्चाई से'' बोलेंगे (देखिये इफिसियों 4:15)।